

## सूरह ज़िलज़ाल<sup>[1]</sup>- 99

## سُورَةُ الزَّلْزَلَةِ

### सूरह ज़िलज़ाल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस में प्रलय के दिन के भूकम्प की चर्चा हुई है जो ((ज़िलज़ाल)) का अर्थ है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।<sup>[1]</sup>
- इस की आयत 1 से 3 तक में धरती की उस दशा की चर्चा है जो प्रलय के दिन होगी और जिसे देख कर मनुष्य चकित रह जायेगा।
- आयत 4 से 5 तक में यह बताया गया है कि उस दिन धरती बोलेगी और अपनी कथा सुनायेगी कि मनुष्य उस के ऊपर रह कर क्या करता रहा है। जो उस की ओर से मनुष्य के कर्मों पर गवाही होगी।
- आयत 6 से 8 तक में बताया गया है कि उस दिन लोग विभिन्न गिरोहों में हो कर अपने कर्मों को देखने के लिये निकल पड़ेंगे और प्रत्येक की छोटी बड़ी अच्छाई और बुराई उस के सामने आ जायेगी।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब धरती को पूरी तरह झंझोड़ दिया जायेगा।
2. तथा भूमी अपने बोझ बाहर निकाल देगी।
3. और इन्सान कहेगा कि इसे क्या हो गया?

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا

وَأُخْرِجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا

- 1 यह सूरह मक्की है। क्योंकि इस में वर्णित विषय इसी का समर्थन करता है। परन्तु कुछ विद्वानों का विचार है कि यह मदीने में अवतीर्ण हुई। इस सूरह के अन्दर संसार के पश्चात दूसरे जीवन तथा उस में कर्मों का पूरा हिसाब लिये जाने का वर्णन है।

- |  |   |
|--|---|
| 4. उस दिन वह अपनी सभी सुचनायें वर्णन कर देगी।                                      | يَوْمَئِذٍ تُخَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝                               |
| 5. क्योंकि तेरे पालनहार ने उसे यही आदेश दिया है।                                   | يَا أَيُّهَا رَبَّنَا أَنْزِلْهُ لَهَا ۝                          |
| 6. उस दिन लोग तितर बितर होकर आयेंगे ताकि वह अपने कर्मों को देख लें। <sup>[1]</sup> | يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۝ |
| 7. तो जिस ने एक कण के बराबर भी पुण्य किया होगा उसे देख लेगा।                       | فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۝                |
| 8. और जिस ने एक कण के बराबर भी बुरा किया होगा उसे देख लेगा। <sup>[2]</sup>         | وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۝                 |

- 1 (1-6) इन आयतों में बताया गया है कि जब प्रलय (क्यामत) का भूकम्प आयेगा तो धरती के भीतर जो कुछ भी है, सब उगल कर बाहर फेंक देगी। यह सब कुछ ऐसे होगा कि जीवित होने के पश्चात् सभी को आश्चर्य होगा कि यह क्या हो रहा है? उस दिन यह निर्जीव धरती प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की गवाही देगी कि किस ने क्या क्या कर्म किये हैं। यद्यपि अल्लाह सब के कर्मों को जानता है फिर भी उस का निर्णय गवाहियों से प्रमाणित कर के होगा।
- 2 (7-8) इन आयतों का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अकेला आयेगा, परिवार और साथी सब बिखर जायेंगे। दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि इस संसार में जो किसी भी युग में मरे थे सभी दलों में चले आ रहे होंगे, और सब को अपने किये हुये कर्म दिखाये जायेंगे। और कर्मानुसार पुण्य और पाप का बदला दिया जायेगा। और किसी का पुण्य और पाप छिपा नहीं रहेगा।